P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-7* March- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महिलाओं की कार्यदशाओं का अध्ययन

कबिता चौधरी
शोधार्थी,
गृहविज्ञान विभाग,
शासकीय विजयाराजे कन्या महाविद्यालय,मुरार,
ग्वालियर ,म.प्र.

रीमा श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त प्राचार्य,
गृहविज्ञान विभाग,
शासकीय विजयाराजे कन्या महाविद्यालय,मुरार,
ग्वालियर ,म.प्र.

ज्योति प्रसाद
सेवानिवृत्त प्राचार्य,
गृहविज्ञान विभाग,
शासकीय विजयाराजे कन्या महाविद्यालय,मुरार,
ग्वालियर ,म.प्र.

सारांश

भारत के व्यापक संदर्भ में महिलाओं की स्थिति, भूमिका एवं अपेक्षाओं की महत्ता को नगण्य नहीं माना जा सकता। स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं के शैक्षणिक विकास एवं व्यवस्थात्मक अवसरों के फलस्वरूप अपेक्षाकृत अधिक अनुपात में महिलाओं ने राष्ट्रीय जीवनधारा में अपनी भागीदारी के प्रमाण दिये हैं। सार्वजनिक एवं निजी संस्थाओं में महिलाओं ने योग्यता के आधार पर अपने स्थान तथा उपलब्धियों को प्राप्त किया है। राजनीतिक क्षेत्रों में ही नहीं राष्ट्रीय जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं की उपस्थिति एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

मुख्य शब्द : महिलाओं की स्थिति, राष्ट्रीय, अध्यापिका चिकित्सक

प्रस्तावना

परिवार का कर्तव्यस्थल एवं कार्यस्थल की दायित्वपूर्ति दोनों ही कार्यशील महिलाओं के लिए वांछनीय स्थितियाँ हैं। ऐसी महिलाओं को स्वभाविक रूप से अतिरिक्त दायित्वों का वहन करना होता है। सामाजिक परिवर्तन की निरन्तर प्रक्रिया में कार्यशील महिलाओं के वृहत्तर दायित्वों की समीक्षा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकताओं एवं कार्यशील महिलाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण की अन्तरक्रिया एवं सम्बद्धता का अध्ययन अनेक अपेक्षित प्रश्नों को जन्म देता है। ये प्रश्न स्वयं अध्ययन के प्राकल्प बन जाते हैं।

शिक्षित एवं कार्यशील महिलाओं की बढ़ती संख्या के बावजूद वस्तुस्थिति में विशेष अन्तर नहीं देखे जा सकते। अवश्य ही राष्ट्रीय सार्वजनिक जीवन में एवं अनेक कार्यक्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका एवं योगदान में वृद्धि हुई है, किन्तु इस स्थिति के बावजूद व्यापक राष्ट्रीय स्तर पर कोई प्रभावी परिवर्तन नहीं हो पाया है। दूसरी ओर विकासशील समाज में इस कतिपय परिवर्तन का सर्वव्यापी होना आवश्यक है।

महिला किसी भी क्षेत्र में एवं किसी भी स्तर पर कार्यशील हो, व्यक्तिगत क्षमता एवं कौशल की भूमिका निर्णायक रही है। इस वास्तविकता को महिला एवं पुरूष के विरोधाभासों से मुक्त कर, सामाजिक समन्वय एवं न्याय के आयामों को सशक्त बनाना आवश्यक है।

कार्यशील महिला का इंगितीकरण केवल परिवार से बाहर कार्यरत होना माना जाये, तो वर्तमान पहलू में निहित अस्पष्टता बनी रहेगी, क्योंकि परिवार के दायित्वों की पूर्ति हेतु प्रतिबद्ध एवं व्यस्त गृहणी भी कार्यरत ही है। साथ ही परिवार से बाहर कार्यशील महिला न केवल पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति करती है वरन् कार्यस्थल को अतिरिक्त दायित्वों का निर्वाहन करना भी महिलाओं के लिए अनिवार्य हो जाता है।

वर्तमान भारत में रोजगार के अवसरों की बढ़ोत्तरी, महिला योग्यता तथा कौशल की स्वीकार्यता एवं शैक्षिक अवसरों की उपलब्धि के फलस्वरूप महिला वर्ग को नवीन अवसर अवश्य ही उपलब्ध हुए हैं। महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टि में परिवर्तन के साथ ही उनको अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक अवसर भी उपलब्ध हुए हैं। इस प्रक्रिया के दूरगामी प्रभावों को नकारा नहीं जा सकता। वृहत् सामाजिक परिवर्तन की असीमित प्रक्रिया में इस आशय एवं आकांक्षा को अव्यवहारिक नहीं माना जा सकता।

कार्यशील महिलाओं के दो भूमिकायों एवं रूप है : सार्वजनिक रूप, अर्थात् कार्यशील महिला, के स्तर पर अध्यापिका चिकित्सक, प्रशासक, वकील, श्रमिक इत्यादि। इस स्थिति में महिला आर्थिक दृष्टि से पारिवारिक स्तर में बढ़ोत्तरी करती है। दूसरी ओर वैयक्तिक एवं पारिवारिक स्तर पर, उसकी अस्मिता की व्याख्या में पुरूष प्राधान्य पूर्वाग्रह है। उसको अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की कोई स्वायत्त पहचान नहीं है। सुरक्षा के नाम पर पुरूष से विलग्न उसका अस्तित्व अमान्य है।

परिवार का कर्तव्यस्थल एवं कार्यस्थल की दायित्वपूर्ति दोनों ही कार्यशील महिलाओं के लिए वांछनीय स्थितियाँ हैं। ऐसी महिलाओं को स्वभाविक रूप से अतिरिक्त दायित्वों का वहन करना होता है।

कार्यशील महिलाओं से भी परिवार की अपेक्षायें वहीं होती है जो एक गैर कार्यशील गृहणी से। चाहे नारी परिवार में संलग्न रहे अथवा कार्यशील हो, सामाजिक दृष्टि सेपरिवर्तन के अभाव में उसके वास्तविक एवं न्यायोचित अधिकारों को अनदेखा किया जाता रहेगा। ऐसी स्थिति में कार्यशील महिला के समक्ष अनेक समस्याऐं प्रस्तुत होती हैं। यदि महिला को कार्य एवं कार्यस्थल सम्बन्धी उचित वातावरण उपलब्ध नहीं होता है तो निराशा एवं उद्विग्नता स्वाभाविक है, वैयक्तिक असंतोष में वृद्धि भी उतनी ही स्वभाविक है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य महिलाओं की कार्यदशाओं का अध्ययन करना है।

शोध अध्ययन हेतु निम्न परिकल्पनायें विकसित की गयी हैं।

1. विभिन्न शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं की व्यवहारिक कार्यदशाओं में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।
2. विभिन्न शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं के कार्यस्थल के वातावरण में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।
3. शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं के पक्षपात सम्बन्धी स्तर को प्रकट करने में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।
4. शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं के समय पर कार्यपूर्ण करने के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।
5. शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं की कार्यनीतियों से असन्तुष्टि के स्तर में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।
6. शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं के कार्य के घन्टों में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।

शोध पद्धति

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध वृहत्तर ग्वालियर में किया गया जोकि प्राचीन ग्वालियर लश्कर तथा मुरार तीन वर्गों में बंटा हुआ है जिसका क्षेत्रफल 8288 वर्ग मीटर है। शोधार्थी का विषय केवल कार्यकारी महिलाओं से सम्बन्धित है अतः चयनित क्षेत्र में से केवल कार्यकारी महिला वर्ग को ही सम्मलित किया गया है।

प्रतिदर्श का चुनाव

शोध के प्रथम चरण में ग्वालियर की शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं की सूची तैयार की गई। इस सूची में से महिलाओं को क्षेत्रीय जनसंख्या के आधार पर दैवनिदर्श विधि द्वारा 300 महिलाओं का चयन किया गया है जिसमें 30 से 50 वर्ष की ऑफिस, चिकित्सालय विद्यालय और महाविद्यालय में कार्य करने वाली 300 शासकीय महिलाओं को सम्मिलित किया गया, जो मध्य और उच्च, सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रतिनिधित्व करती है। इन महिलाओं की कार्यदशाओं का अध्ययन करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण एवं परिणाम

तालिका क्रमांक–1

महिलाओं के कार्यस्थल के वातावरण में सार्थक विभिन्नता को दर्शाने वाली तालिका

कार्यकारी महिलाए	शांत	अशांत	सहयोगात्मक	असयोगात्मक	स्नेह पूर्ण	योग	X^2	df	P Value
मोतीमहल	12	21	10	10	07	60	70.81	10	P<0.01 पर सार्थक
शिक्षिका	15	10	16	16	18	75			
नर्स	05	08	12	05	05	35			
डॉक्टर	09	-	07	-	04	20			
सिंचाई विभाग	02	06	08	05	04	25			
लेखा शाखा	21	17	18	22	07	85			
योग	64	62	71	58	45	300			

उपरोक्त तालिका कार्यकारी महिलाओं के पारिवारिक वातावरण का प्रदर्शन करती हैं, जिसका काई मान 70.81 प्राप्त हुआ, जो कि 0.01 स्तर पर अपनी सार्थकता सिद्ध करती हैं।

तालिका क्रमांक–2

महिलाओं में कार्यस्थल पर पक्षपात सम्बन्धी समस्याओं के स्तर में सार्थक विभिन्नता को दर्शाने वाली तालिका

कार्यकारी महिलाए	उच्च	मध्यम	निम्न	योग	X^2	df	P Value
मोतीमहल	21	27	12	60	19.04	10	P<0.05 पर सार्थक
शिक्षिका	27	33	15	75			
नर्स	16	13	06	35			
डॉक्टर	02	08	10	20			
सिंचाई विभाग	12	09	04	25			
लेखा शाखा	26	35	24	85			
योग	104	125	71	300			

उपरोक्त तालिका कार्यस्थल पर पक्षपात संबंधी समस्या के सार्थक स्तर को प्रदर्शित करती हैं। जिसका काई मान 19.04 है जो कि 0.05 पर अपनी सार्थकता प्रकट करती हैं।

तालिका क्रमांक–3

कार्यस्थल पर समय पर कार्य पूर्ण करने के स्तर में सार्थक विभिन्नता को दर्शाने वाली तालिका

कार्यकारी महिलाए	उच्च	मध्यम	निम्न	योग	X^2	df	P Value
मोतीमहल	22	25	13	60			
शिक्षिका	19	28	28	75			
नर्स	08	11	16	35			P<0.05
डॉक्टर	02	06	12	20	19.64	10	पर सार्थक
सिंचाई विभाग	08	12	05	25			
लेखा शाखा	19	35	31	85			
योग	78	117	105	300			

उपरोक्त तालिका कार्यकारी महिलाओं के समय पर कार्य पूर्ण करने के स्तर में सार्थक विभिन्नता को स्पष्ट करती है जिसका काई मान 19.64 रहा जो कि 0. 05 स्तर पर अपनी सार्थकता प्रगट करती हैं।

तालिका क्रमांक–4

कार्यस्थल पर नीतियों से असंतुष्टि के स्तर में सार्थक विभिन्नता को दर्शाने वाली तालिका

कार्यकारी महिलाए	उच्च	मध्यम	निम्न	योग	X^2	df	P Value
मोतीमहल	22	29	09	60			
शिक्षिका	40	28	07	75			
नर्स	15	14	06	35			P<0.05
डॉक्टर	10	07	03	20	20.30	10	पर सार्थक
सिंचाई विभाग	09	12	04	25			
लेखा शाखा	30	31	24	85			
योग	126	121	53	300			

उपरोक्त तालिका कार्यकारी महिलाओ के कार्यस्थल की नीतियो से असंतुष्टि के विचार की विभिन्नता को प्रदर्शित करती है। जिसका काई मान 20. 30 है जो कि 0.05 स्तर पर अपनी सार्थकता सिद्ध करता हैं।

विश्लेषण एवं परिणाम

शोध आंकड़ों का विश्लेषण कर निम्न परिणाम ज्ञात किये गये।

उपरोक्त तालिकाऐं प्रदर्शित करती हैं, कि महिलाओं के कार्य स्थल का वातावरण विभिन्न होता है। जिसमें शांत वातावरण में 21.23 प्रतिशत, अशांत वातावरण 20.66 प्रतिशत, सहयोगात्मक वातावरण 23.66 प्रतिशत, असहयोगात्मक के वातावरण 19.33 प्रतिशत तथा स्नेहपूर्ण वातावरण 15 प्रतिशत महिलायें पायी गयी। जिनका काई मान 70.81 है जो 0.01 पर अपनी सार्थकता प्रकट करती है।

महिलाओं में कार्यस्थल पर पक्षपात सम्बन्धी समस्याओं के स्तर में .05 स्तर पर सार्थक विभिन्नता पायी गई।

कार्य स्थल पर समय पर कार्य पूर्ण करने के स्तर .05 स्तर पर सार्थक विभिन्नता दिखाई गई।

कार्यस्थल पर महिलाओं के नीतियों से असन्तुष्टि के स्तर .05 स्तर पर सार्थक विभिन्नता दिखाई दी।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त शोध परिणाम इस कथन की पुष्टि करते हैं, कि विभिन्न शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं की कार्यदशाओं में सार्थक अन्तर पाया जाता है तथा उनकी कार्यदशायें तथा कार्य के घन्टों में सार्थक सम्बन्ध होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुप्ता डॉ. एस.सी. पद्मिनी ''वूमेन वर्क्स ऑफ इण्डिया'' बम्बई ऐशिया पब्लिशिंग हाउज बाम्बे, 1960*
2. *गार्डगिल के.आर. ''विमेन इन वर्गिक फार्स इन इण्डिया'' दिल्ली विश्वविद्यालय प्रेस, 1955*
3. *हजल डीवलिमा ''विमेन इन लाकल गर्वमेन्ट'' दिल्ली कोन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, 1983*
4. *हाटे सी.ए. ''चेजिंग स्टेट ऑफ विमेन इन फास्ट इण्डिया'' बम्बई एलाइंड 1967*
5. *किरण वेदी ''पहली महिला आई.पी.एस. सेवानिवृत्त'' महिला सशक्तिकरण कुछ विचार योजना।*
6. *कपूर प्रमिला ''द चेंजिंग ऑफ द वर्किंग वूमेन इण्डिया'' दिल्ली विकास, 1970*